मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूंढाड़ी गीतों का सांगीतिक विश्लेषण

राजस्थान विश्वविद्यालय की

पी-एच.डी. उपाधि हेतु

शोध-प्रबन्ध-सार

निर्देशिका

प्रोफेसर मायारानी टाक

पूर्व अधिष्ठाता, ललित कला संकाय

पूर्व अध्यक्ष, संगीत विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

प्रस्तुतकर्ता

सुधीर माथुर

पूर्व निदेशक,

कला भारती,

अलवर (राज.)

संगीत विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

2012

मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूंढाड़ी गीतों का सांगीतिक विश्लेषण

राजस्थान विश्वविद्यालय की

पी-एच.डी. उपाधि हेतु

शोध-प्रबन्ध-सार

निर्देशिका

प्रोफेसर मायारानी टाक

पूर्व अधिष्ठाता, ललित कला संकाय

पूर्व अध्यक्ष, संगीत विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

प्रस्तुतकर्ता

सुधीर माथुर

पूर्व निदेशक,

कला भारती,

अलवर (राज.)

संगीत विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

2012

प्राक्कथन

मेरा जन्म एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। मेरी माताजी को संगीत से बेहद लगाव था। मेरे पिता स्व. श्री रामलाल जी माथुर जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के निदेशक थे जिन्होंने राजस्थान की लोक कलाओं पर काफी अध्ययन किया है। वे शास्त्रीय गायन एवं सितार के कलाकार भी रहे हैं। पं. रामलाल माथुर विश्वविख्यात सरोदवादक पद्मविभूषण उस्ताद अली अकबर खाँ साहब के प्रमुख शिष्य एवं संगीतकार जयदेव के निकट सहयोगी रहे हैं तथा उनके द्वारा 'आँधियां' फ़िल्म में सहायक संगीतकार के रूप में भी कार्य किया गया है। मेरे पिता स्व. श्री राम लाल जी माथुर ने वीणा कैसेट की स्थापना की तथा लगभग 30 कैसेटों में संगीत दिया एवं उनके इस कार्य निष्पादन के दौरान मुझे उनके साथ राजस्थान के लोकसंगीत के विभिन्न पक्षों से निकट का साक्षात् करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

अपने संगीतज्ञ पिता से मिले संस्कारों के कारण मुझे बचपन से ही संगीत के प्रति अभिरूचि पैदा हुई और आगे चलकर मैंने जीविकोपार्जन हेतु संगीत शिक्षण को अपनाया। मैंने संगीत शिक्षक के रूप में राजस्थान के अनेक स्थानों पर अपनी सेवाएं दी तथा संगीत के प्रायोगिक परीक्षक एवं कलाकार के रूप में अपनी प्रस्तुतियों के दौरान अनेक कलाकारों, कलाप्रेमियों एवं कला समीक्षकों से निकट का साक्षात् रहा। इस सम्पूर्ण कालावधि में मुझे विभिन्न स्थानों के लोक संगीत को सुनने, जानने एवं उसकी विशिष्टताओं को जानने-परखने का अवसर मिला।

संयोगवश मुझे रवीन्द्र मंच, जयपुर पर 'त्रिवेणी कला संगम, जयपुर' की ओर से आयोजित दो दिवसीय नाट्य समारोह में संगीतमय नाटक ' लड़ी मैड़ की' देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिसमें श्रृंखलाबद्ध रीति से मैड़-विराट अँचल के ग्राम्य जीवन की जीवन्त झलक देखने को मिली। इस नाटक में लगभग 11 नवीन ढूंढ़ाड़ी गीतों के माध्यम से राजस्थान के जनजीवन की प्रस्तुति की गई थी। डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा जी द्वारा लिखित एवं निर्देशित इस नाटक के गीत 'अरठ' पर किया जा रहा प्रस्तुतीकरण बड़ा ही मनमोहक था- **स्थाई** चर्रच्यूं चर्रच्यूं करतो चालै अरठ कलेवो लेजा छोरी ए

सर्रस्यूं सर्रस्यूं दही बिलोरी माई पाछै जाऊं बेगि ए
तडकाऊ को टेम व्हियो पण सूंसाटो छार्‌यो
चिडी चुणगला चीं-चीं बोलीं टाबर सोर्‌या
माई ऊठ चूलो बाळ्‌यो छोरी दही बिलोवै रै [1]

इस नाटक में समाहित गीत लोकगीत न थे वरन् सभी के सभी गीत कैलाश जी की सर्जना का ही परिणाम थे। मुझे अपने जीवन में प्रथम बार इस प्रकार के गीत सुनने एवं उनके नाट्य प्रयोग रूप में दिखायी दिये। उस दौरान मुझे मैड़- विराट अँचल के प्रचलित लोक संगीत, महाभारतकालीन स्थान विराटनगर में पाण्डवों के अज्ञातवास के दौरान महान् धनुर्धारी अर्जुन द्वारा वृहन्नला के वेश में राजा विराट की पुत्री उत्तरा को संगीत एवं नृत्य की शिक्षा देना, भीम के पखावज वादन, श्री सियावरजी के

1 डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा : मेरे गीत दिखायें गाँव (2011) , पृ. 48-57

मन्दिर ग्राम मैड़ के महन्त श्री गणेश दास जी महाराज द्वारा भजन-कीर्तनों का आयोजन तथा वहां के मेलों एवं पर्वों पर आयोजित होने वाले संगीत, नृत्य एवं लोकनाटकों के आयोजन की जानकारी मिली। तब मेरे मन में यह बात घर कर गई कि यह अँचल संगीत के क्षेत्र में अपने आप में एक विशिष्ट क्षेत्र है। यहां के भर्तृहरी के गीत, जोगियों एवं सन्तों के गीतों ने मेरे मन को अपनी ओर मोड़ लिया। इसी दौरान मुझे पता लगा कि ग्राम मैड़ के डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा ने इस अँचल के प्राचीन एवं लोक संगीत के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक सामाजिक परिवर्तन, वहाँ के खान-पान, रीति-रिवाज, वेशभूषा, वार-त्यौंहार, सामाजिक मान्यताओं आदि से सम्बन्धित लगभग 125 ढूँढ़ाड़ी गीत लिखे हैं एवं जिनका विभिन्न कलाकारों एवं संस्थाओं द्वारा देश के विभिन्न भागों में संगीत एवं नाट्यरूप में प्रस्तुतीकरण भी किया गया है। इन्हीं गीतों में से 13 गीत जो 'त्रिवेणी कैसेट-सी.डी.' में दिये गये हैं वे भी मुझे सुनने को मिले जिनमें इस अँचल की जीती-जागती तस्वीर देखने को मिली।

इस प्रकार कैलाश जी के नवसृजित गीतों ने मेरा ध्यान उस ऐतिहासिक अँचल की ओर आकृष्ट किया जो अनेक ऐतिहासिक-पौराणिक तथ्यों को अपने अँचल में समेटे हुए था। वहां का चप्पा-चप्पा अतीत की घटनाओं से जुड़ा हुआ है और डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा जी के गीत उन सभी को एक नई अभिव्यक्ति के साथ उजागर करते हैं। कैलाश जी अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल की ओर से कत्थक नृत्य एवं गायन के परीक्षक के रूप में कला भारती अलवर में आ चुके थे। मैं वहां पर निदेशक के रूप में नियुक्त था अत: कैलाश जी से पूर्व से ही परिचित था। मैंने जब उनसे उनके नवसृजित गीतों पर शोधकार्य करने की मंशा जतायी तो उन्होंने मुझे राजस्थान विश्वविद्यालय की तत्कालीन संगीत विभागाध्यक्ष प्रोफेसर मायारानी टाक से सम्पर्क करने की सलाह दी। माया जी ने भी इस कार्य के लिये मुझे प्रेरित किया और अंतत: इन दोनों संगीत विभूतियों की प्रेरणा एवं सहयोग से मैंने प्रोफेसर मायारानी टाक के निर्देशन में मैड़-विराट अँचल के इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों पर शोधकार्य करना प्रारम्भ किया।

मैंने अपने सम्पूर्ण शोध-कार्य को छह अध्यायों में विभक्त किया है, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

प्रथम अध्याय **'राजस्थान का मैड़-विराट अँचल : एक परिचयात्मक अध्ययन'** के अन्तर्गत महाभारतकालीन मैड़-विराट अंचल की भौगोलिक स्थिति तथा ऐतिहासिक विरासत को बताते हुए वहां की सांगीतिक पृष्ठभूमि को उजागर किया गया है। ढूँढाड़ का यह अंचल अनेक ऐतिहासिक-पौराणिक तथ्यों को अपने अंचल में समेटे हुए है तथा यहां का चप्पा-चप्पा अतीत की ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सांगीतिक घटनाओं से जुड़ा हुआ है जिन्हें इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय **'मैड़-विराट अँचल के पारम्परिक ढूँढाड़ी लोकगीत'** के अन्तर्गत मैंने लोकगीत के अर्थ एवं परिभाषा को बताते हुए मैड़-विराट अंचल के संतों, जोगियों, एवं भर्तृहरी के गीतों को प्रस्तुत करते हुए उनकी विशेषताओं को बताने का प्रयास किया है। इसके लिए मैंने प्रत्यक्ष रूप से इस अंचल में जाकर विभिन्न कलाकारों, गुणीजनों एवं कला-मर्मज्ञों से मिलकर एवं सामग्री एकत्र कर अध्याय को पूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय **'मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीत'** के अन्तर्गत नवसृजन के अर्थ एवं विशेषताओं का उल्लेख करते हुए ग्राम मैड़ निवासी एवं इस क्षेत्र के ढूँढाड़ी गीतों के नवसृजनकार डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा जी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का विषयवार वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय **'नवसृजित ढूंढाड़ी गीतों में प्रयुक्त वाद्य एवं ताल का प्रयोग'** में मैड़-विराट अंचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों में प्रयुक्त विभिन्न वाद्य यंत्रों के बारे में बताया गया है।

पंचम अध्याय **'मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का सांगीतिक विश्लेषण'** के अन्तर्गत मैड़-विराट अंचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का स्वरलिपि सहित सांगीतिक विश्लेषण प्रस्तुत कर इन गीतों के स्वतंत्र रूप से प्रस्तुतीकरण किये जाने की ओर एक साहसिक प्रयास किया गया है।

षष्ठ अध्याय **'मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का प्रयोग - विविध आयाम'** के अन्तर्गत मैड़-विराट अंचल के इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों के वैयक्तिक एवं संस्थागत प्रयोगों को छायाचित्रों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

शोध प्रबन्ध के अन्त में **'उपसंहार'** के अन्तर्गत अपने सम्पूर्ण शोध-कार्य से प्राप्त निष्कर्षों का आकलन किया गया है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि 'मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का सांगीतिक विश्लेषण' विषय पर किया गया यह शोध-कार्य न केवल आगामी पीढ़ी के लिए वरन् संगीत-नृत्य के जिज्ञासुओं व प्रेमियों के लिए भी निश्चय ही उपयोगी सिद्ध होगा। अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत सहायक संदर्भ ग्रन्थ सूची एवं इन नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों के विभिन्न प्रयोगों से सम्बन्धित अख़बारी कवरेज दिया गया है।

‘ ’

मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूंढ़ाड़ी गीतों का सांगीतिक विश्लेषण

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

आभार प्रदर्शन

प्रथम अध्याय : राजस्थान का मैड़-विराट अँचल : एक परिचयात्मक अध्ययन 1-7

(।) भौगोलिक स्थिति

(।।) ऐतिहासिक विवेचन

(।।।) सांगीतिक पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय : मैड़-विराट अँचल के पारम्परिक ढूँढाड़ी लोकगीत 8-19

(।) लोकगीत का अर्थ एवं परिभाषा

(॥) मैड़-विराट अँचल के पारम्परिक ढूँढाड़ी लोकगीत

(क) संतों के गीत

(ख) जोगियों द्वारा गाये जाने वाले भर्तृहरी आदि के गीत

(।।।) मैड़-विराट अँचल के ढूँढाड़ी गीतों की विशेषताएं

तृतीय अध्याय : मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीत 20-108

(।) नवसृजन का अर्थ एवं परिभाषा

(॥) नवसृजन की आवश्यकता एवं महत्त्व

(।।।) डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीत

(क) डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(ख) डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा द्वारा नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का वर्गीकरण

(1) किसान एवं मजदूर वर्ग के गीत

(2) मेलों एवं पर्वों के गीत

(3) त्यौंहारों एवं सामाजिक अवसरों के गीत

(4) सामाजिक रिश्तों एवं प्रणय के गीत

(5) नीति एवं शिक्षा के गीत

(6) स्कूली जीवन के गीत

(7) मानवीय संवेदनाओं के गीत

(8) परम्परागत कार्यों के गीत

(9) श्रद्धा एवं भक्ति के गीत

(10) रीति-रिवाजों एवं सामाजिक मान्यताओं के गीत

(11) युग परिवर्तन के गीत

चतुर्थ अध्याय : नवसृजित ढूंढाड़ी गीतों में प्रयुक्त वाद्य एवं ताल का प्रयोग 109-111

(।) हारमोनियम (।।) ढ़ोलक (।।।) झांझ (iv) तबला (v) ढप

पंचम अध्याय : मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का सांगीतिक विश्लेषण 112-211

षष्ठ अध्याय : मैड़-विराट अँचल के नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों का प्रयोग - विविध आयाम 212-223

(।) वैयक्तिक प्रयोग

(।।) संस्थागत प्रयोग

उपसंहार

सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची

****